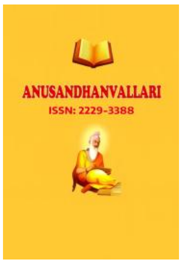

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

जापान में बौद्ध धर्म का प्रसार: एक अवलोकन

[1]डॉ कामाख्या नारायण तिवारी, [2]प्रोफेसर इंद्र नारायण सिंह

[1]सह आचार्य, बौद्ध-अध्ययन विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

[2]आचार्य, बौद्ध-अध्ययन विभाग ,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश: जापान में बौद्ध धर्म का प्रवेश और उसका प्रसार एशियाई धार्मिक इतिहास का एक अद्वितीय अध्याय है। यह धर्म भारत से उत्पन्न होकर चीन और कोरिया के माध्यम से जापान पहुँचा और वहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संरचना को गहन रूप से प्रभावित करता चला गया। जापानी परंपराओं, जैसे शिंतो, के साथ इसके सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व ने धर्म के स्वरूप को और भी बहुआयामी बना दिया। प्रारंभिक काल में राजकीय समर्थन और अभिजात वर्ग की आस्था ने इसे बल प्रदान किया, जबकि मध्यकाल में विभिन्न सम्प्रदायों की स्थापना ने दार्शनिक गहराई और सांस्कृतिक विविधता को जन्म दिया। आधुनिक और समकालीन युग में यह परंपरा पश्चिमी प्रभावों, वैश्वीकरण और धर्मनिरपेक्षता जैसी चुनौतियों के बीच भी प्रासंगिक बनी हुई है। इस अध्ययन का उद्देश्य है जापान में बौद्ध धर्म की यात्रा, उसके स्वरूपगत रूपांतरण, तथा सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान का समग्र अवलोकन प्रस्तुत करना।

बीज शब्द : जापान , बौद्ध धर्म ,स्थापत्य ,सांस्कृतिक,भारतीय,वैश्विक।

प्रस्तावना

1.1 विषय की पृष्ठभूमि

बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं बल्कि एक गहन दार्शनिक और सांस्कृतिक धारा है, जिसने मानव सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया। ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित इस धर्म ने करुणा, मध्यम मार्ग और प्रज्ञा को जीवन के मूल सिद्धांत बनाए। भारत से प्रारंभ होकर यह क्रमशः श्रीलंका, चीन, कोरिया और अंततः जापान पहुँचा। इसका प्रवेश मुख्यतः चीन और कोरिया के सांस्कृतिक-राजनीतिक संपर्कों से हुआ। छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में जब यह जापान पहुँचा, तब वहाँ शिंतो परंपराओं का वर्चस्व था, जिसमें प्रकृति-पूजा और पूर्वजों की वंदना प्रमुख थी। (कार्टर, 2021)

जापानी समाज परंपरागत रूप से लचीला और समन्वयकारी रहा, जिसने बाहरी संस्कृतियों को अस्वीकार करने के बजाय आत्मसात किया। बौद्ध धर्म को भी शिंतो के साथ समन्वित कर नया रूप दिया गया। इसका प्रभाव धर्म तक सीमित न रहकर साहित्य, कला, स्थापत्य, शिक्षा, दर्शन और शासन तक फैल गया। सामुराई योद्धाओं की युद्धनीति में भी इसका असर दिखता है। इस प्रकार जापान में बौद्ध धर्म एक धार्मिक आंदोलन से आगे बढ़कर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का वाहक सिद्ध हुआ। (विकिपीडिया, जापान में बौद्ध धर्म)

1.2 शोध प्रश्न एवं उद्देश्य

यह अध्ययन उन मूलभूत प्रश्नों पर केंद्रित है जो जापान में बौद्ध धर्म के प्रवेश और विकास को समझने में सहायक हैं:-

1. बौद्ध धर्म जापान तक किस मार्ग से पहुँचा चीन-कोरिया के सांस्कृतिक संपर्कों से या व्यापारिक संबंधों से?

2. प्रारंभिक जापानी समाज ने इसे किस रूप में स्वीकार किया बाहरी धर्म या स्थानीय परंपराओं के साथ समन्वित आस्था के रूप में?

3. विभिन्न सम्प्रदायों (जैसे ज़ेन, तेंदाई, शिंगोन) ने संस्कृति, कला और राजनीति को कैसे प्रभावित किया?

4. वैश्वीकरण के युग में बौद्ध धर्म किन चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहा है?

अध्ययन का पहला उद्देश्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रसार की प्रक्रिया को समझना है। दूसरा, जापानी सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संरचना में बौद्ध धर्म के योगदान का मूल्यांकन करना। तीसरा, समकालीन जापान में इसकी प्रासंगिकता और वैश्विक चुनौतियों (जैसे उपभोक्तावाद, आधुनिकीकरण और आध्यात्मिक शून्यता) का विश्लेषण करना। इस प्रकार शोध केवल अतीत की पड़ताल नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा भी दर्शाता है।

1.3 कार्यविधि और सैद्धांतिक आधार

शोध का दृष्टिकोण बहुआयामी है, जिसमें ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक पद्धतियों का संयोजन किया गया है। ऐतिहासिक-पाठ विश्लेषण के तहत जापान में बौद्ध धर्म के आगमन और प्रमुख घटनाओं का अध्ययन किया गया। इसके लिए निहोन शोकी, कोजिकी तथा चीनी-कोरियाई अभिलेखों का संदर्भ लिया गया।

तुलनात्मक दर्शन से समझा गया कि भारतीय बौद्ध विचारधारा, चीन और कोरिया से गुजरकर जापान में नए रूप में कैसे प्रकट हुई। उदाहरणस्वरूप, ध्यान पद्धतियाँ जापान में ज़ेन परंपरा का आधार बनीं, जिसने सौंदर्यशास्त्र और जीवन-दर्शन को गहराई से प्रभावित किया। सांस्कृतिक अध्ययन के तहत कला, स्थापत्य, शिक्षा और राजनीति पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया। इसमें आधुनिक शोधपत्रों, पुरातात्विक खोजों और जापानी विद्वानों के विचार शामिल हैं। (मसाकी, 2022)

सैद्धांतिक आधार के रूप में सांस्कृतिक अन्तःक्रिया सिद्धांत और धर्मांतरण सिद्धांत अपनाए गए। ये सिद्धांत बताते हैं कि बाहरी धर्म किसी समाज में प्रवेश कर केवल स्वीकार नहीं होता, बल्कि उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप ढलकर नया रूप लेता है यही जापान के संदर्भ में स्पष्ट दिखता है।

2: ऐतिहासिक आधार

2.1 भारत से जापान तक बौद्ध धर्म का मार्ग

बौद्ध धर्म का उद्भव उत्तर भारत में हुआ, जहाँ गौतम बुद्ध ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इसे स्थापित किया। मौर्य सम्राट अशोक (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) ने इसके प्रचार-प्रसार को राजकीय संरक्षण दिया और धर्मदूतों को श्रीलंका, मध्य एशिया व दक्षिण-पूर्व एशिया भेजा। इसी क्रम में यह चीन पहुँचा और ताओवादी व कन्फ्यूशियस परंपराओं के साथ समन्वित हुआ।

चीन से होते हुए यह कोरिया पहुँचा। पाँचवीं–छठी शताब्दी में कोरियाई राजाओं ने इसे शाही संरक्षण दिया और जापान को प्रतिमाएँ, सूत्र और भिक्षु भेजे। 552 ईस्वी में पैकचे राजा द्वारा जापानी सम्राट को बौद्ध प्रतिमा व ग्रंथ उपहारस्वरूप भेजे जाने को औपचारिक प्रवेश माना जाता है। इसके बाद शाही परिवार और कुलीन वर्ग ने धीरे-धीरे इसे अपनाया। इस प्रकार जापान में बौद्ध धर्म का प्रवेश केवल धार्मिक आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि कूटनीति, सांस्कृतिक संपर्क और ज्ञान-विनिमय का परिणाम था। स्थापत्य, चित्रकला, लेखन-पद्धति और दर्शन भी साथ पहुँचे।

2.2 जापान की आद्य-धार्मिक परंपराएँ

बौद्ध धर्म से पहले जापान की धार्मिक पहचान मुख्यतः शिंतो परंपरा पर आधारित थी, जिसका अर्थ है “देवताओं का मार्ग”। यह प्रकृति-पूजा, पूर्वजों की वंदना और स्थानीय देवताओं (कामि) की आस्था पर केंद्रित था। (इरहार्ट, एच. बायरन) शिंतो में नैतिक सिद्धांतों की अपेक्षा अनुष्ठानों और शुद्धि पर बल था। इसी कारण जब बौद्ध धर्म आया, तो विरोध के बजाय सहअस्तित्व की नीति अपनाई गई। धीरे-धीरे “शिंतो-बौद्ध समन्वय” की परंपरा विकसित हुई। शिंतो देवताओं को बुद्ध या बोधिसत्वों के अवतार माना जाने लगा। बौद्ध मंदिरों में शिंतो मूर्तियाँ रखी जाने लगीं और शिंतो मंदिरों में बौद्ध अनुष्ठान होने लगे। इस समन्वय ने जापानी संस्कृति को विशेष लचीलापन और गहराई दी।

2.3 प्रारम्भिक स्रोत एवं अभिलेख

बौद्ध धर्म के प्रारंभिक विकास के प्रमाण निहोन शोकी (720 ईस्वी) और कोजिकी (712 ईस्वी) जैसे ग्रंथों में मिलते हैं। इनमें सम्राटों द्वारा संरक्षण और उसके सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव का उल्लेख है। पुरातात्विक दृष्टि से होर्यू-जी (Hōryū-ji) मंदिर, जिसे सातवीं शताब्दी में प्रिंस शोतोकु ने बनवाया, विशेष महत्व रखता है। इसकी मूर्तियाँ भारतीय और चीनी शैली के सम्मिश्रण का परिचायक हैं। नारा काल (710–794 ईस्वी) की प्रतिमाएँ और गुफा-चित्र भी इस प्रभाव को प्रमाणित करते हैं। साथ ही, बौद्ध ग्रंथों का जापानी भाषा में अनुवाद और स्थानीय भिक्षुओं की शिक्षा-प्रशिक्षण परंपरा यह दर्शाती है कि यह धर्म बाहरी प्रभाव भर नहीं रहा, बल्कि जापान की संस्कृति में गहराई से समाहित हो गया।

3 प्रारम्भिक प्रसार

3.1 शोतोकु तैशी और राजकीय समर्थन

प्रिंस शोतोकु तैशी (574–622 ईस्वी) को जापान में बौद्ध धर्म का प्रमुख संरक्षक माना जाता है। उन्होंने इसे केवल व्यक्तिगत आस्था नहीं, बल्कि राज्य-नीति और प्रशासन का हिस्सा बनाया। शोतोकु ने "सत्रह अनुच्छेदों का संविधान" (604 ईस्वी) तैयार किया, जिसमें करुणा, सामंजस्य और नैतिक आचरण को शासन की नींव माना गया। उन्होंने चीन व कोरिया से विद्वानों को बुलाया और स्थानीय भिक्षुओं को विदेश भेजकर शिक्षा दिलवाई। (डी बेरी एवं अन्य, 2001) उनके संरक्षण में होर्यू-जी जैसे भव्य मंदिर बने, जो आज भी विश्व धरोहर स्थल हैं। ये धार्मिक केंद्र होने के साथ-साथ शिक्षा और दार्शनिक विमर्श के भी स्थल बने। शोतोकु ने चीन की सुई वंश से संबंध स्थापित कर बौद्ध धर्म को कूटनीति और संस्कृति का आधार बनाया। इस प्रकार शोतोकु के काल में बौद्ध धर्म एक सशक्त सांस्कृतिक-राजनीतिक धारा के रूप में स्थापित हुआ।

3.2 असुका और नारा काल

असुका काल (552–710 ईस्वी) जापान में बौद्ध धर्म के सुदृढ़ीकरण का प्रथम चरण था। इस समय बौद्ध धर्म को शाही संरक्षण मिला और मठ शिक्षा व प्रशासन के केंद्र बने। नारा काल (710–794 ईस्वी) में इसका प्रभाव और गहरा हुआ। सम्राट शोमु ने तोदाइ-जी का निर्माण कराया, जिसमें विशाल "दैबुत्सु" प्रतिमा स्थापित हुई। यह मंदिर धार्मिक प्रतीक के साथ साम्राज्य की शक्ति और एकता का भी द्योतक था। इस युग में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद हुआ और सम्प्रदायों के विद्वानों ने वाद-विवाद किए। मठों की शक्ति इतनी बढ़ी कि कभी-कभी उन्होंने राजसत्ता को चुनौती भी दी। (एशियाई कला विभाग, 2000)

3.3 कला और स्थापत्य में योगदान

बौद्ध धर्म ने जापानी कला व स्थापत्य को गहराई से प्रभावित किया। मूर्तिकला में बुद्ध और बोधिसत्वों की प्रतिमाएँ भारतीय गंधार शैली व चीनी प्रभावों के साथ जापानी सौंदर्यशास्त्र में ढलीं। चित्रकला में मंडल, गुफा-चित्र और धार्मिक स्क्रॉल लोकप्रिय हुए। मंडल दार्शनिक अवधारणाओं का दृश्य रूप बने। स्थापत्य में लकड़ी के विशाल मंदिर, स्तूप और पगोडा विकसित हुए। होर्यू-जी और तोदाइ-जी इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। बौद्ध स्थापत्य ने संतुलन और प्रकृति के साथ एकत्व को महत्व दिया और जापान को विशिष्ट पहचान दी।

4 सम्प्रदाय और विचारधाराएँ

4.1 तेंदाई और शिंगोन

नौवीं शताब्दी में तेंदाई और शिंगोन सम्प्रदाय उभरे। तेंदाई, जिसकी स्थापना सैचो ने की, लोटस सूत्र पर आधारित था और शिक्षा व सार्वभौमिक उद्धार पर जोर देता था। शिंगोन सम्प्रदाय की स्थापना कुकाई ने की। यह गूढ़ परंपरा थी, जिसमें मंत्र, मंडल और विशेष अनुष्ठान महत्व रखते थे। दोनों सम्प्रदायों ने जापानी धार्मिक संस्कृति को विविधता और गहराई प्रदान की।

4.2 ज़ेन और सामुराई संस्कृति

कामाकुरा काल (1185–1333) में ज़ेन सम्प्रदाय लोकप्रिय हुआ। इसका मूल चीन की चान परंपरा थी और यह प्रत्यक्ष अनुभव व ध्यान (Zazen) पर आधारित था। ज़ेन ने सामुराई संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। अनुशासन, सरलता और मानसिक दृढ़ता इसकी प्रमुख शिक्षाएँ थीं। योद्धा युद्ध से पहले ध्यान और आत्मसंयम का अभ्यास करते थे। ज़ेन का प्रभाव चाय-समारोह, बागवानी, मार्शल आर्ट्स और सुलेख पर भी पड़ा। इसने जापानी सौंदर्य-दृष्टि को "सरलता में गहराई" का दर्शन दिया। (बेनेश, 2016)

4.3 शुद्ध भूमि परंपरा

शुद्ध भूमि परंपरा ने बौद्ध धर्म को व्यापक जनमानस तक पहुँचाया। इसका केंद्र अमिदा बुद्ध में आस्था थी। अनुयायी मानते थे कि उनका नाम जपने से "शुद्ध भूमि" में पुनर्जन्म मिलता है। जोडो शिन्शु, जिसे शिनरन ने विकसित किया, इसका लोकप्रिय रूप बना। इसकी सादगी ने किसानों व साधारण जनता को आकर्षित किया। इस परंपरा ने बौद्ध धर्म को लोकतांत्रिक स्वरूप दिया और मुक्ति को सभी के लिए सुलभ बनाया।

5 समाज और राजनीति

5.1 शिक्षा और साहित्य पर प्रभाव

बौद्ध धर्म ने जापानी शिक्षा और साहित्य में गहरा प्रभाव डाला। बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद काना लिपि के विकास का आधार बना और साक्षरता बढ़ी। साहित्य में करुणा, अनित्यता और नश्वरता प्रमुख विषय बने। नारा व हेयान काल में बौद्ध मठ शिक्षा और साहित्यिक सृजन के केंद्र बने। बौद्ध मठ धार्मिक केंद्र होने के साथ राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के प्रतीक भी बने। नारा काल में तोदाइ-जी और अन्य मठों के पास भूमि-संपत्ति थी और वे प्रशासनिक निर्णयों में हस्तक्षेप करने लगे। कभी-कभी इनकी शक्ति इतनी बढ़ी कि वे शाही सत्ता के प्रतिद्वंद्वी बन गए। कई बार शासकों ने सैन्य बल से उनकी शक्ति सीमित की। फिर भी, बौद्ध धर्म राजसत्ता की वैधता का आधार रहा।

5.2 शिंतो और बौद्ध सह-अस्तित्व

जापान की विशेषता है – शिंतो-बौद्ध समन्वय । इसमें शिंतो के कामि को बुद्धों के अवतार माना गया और मंदिरों में दोनों परंपराओं का सम्मिलन हुआ। यह सह-अस्तित्व जापानी समाज की सहनशीलता और समावेशिता का प्रतीक बना। यद्यपि मेइजी पुनर्स्थापन (19वीं सदी) में इन्हें अलग करने का प्रयास हुआ, पर लोकमानस में इनका संगम आज भी मौजूद है। (लार्सन, बी.,2018)

6 आधुनिक संदर्भ

6.1 मेजी पुनर्स्थापन और परिवर्तन

19वीं शताब्दी के मेजी युग (1868) ने जापानी इतिहास में निर्णायक मोड़ लाया। इस काल में सम्राट ने पश्चिमी राष्ट्रों की तर्ज पर जापान का आधुनिकीकरण करने का प्रयास किया। राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए शिंतो को राज्यधर्म का दर्जा दिया गया और शिंबुत्सु बुनरी नीति के तहत बौद्ध धर्म को शिंतो से अलग करने का प्रयास हुआ। इसके परिणामस्वरूप हजारों बौद्ध मंदिरों को क्षति पहुँची और अनेक मठ भंग कर दिए गए। भिक्षुओं को विवाह और सांसारिक जीवन अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यह बौद्ध धर्म के लिए सबसे बड़ी संस्थागत चुनौतियों में से एक थी, जिसने उसकी सामाजिक स्थिति को कमजोर किया, किंतु साथ ही उसे नये रूपांतरण की दिशा भी दी। (बेस्ली, डब्ल्यू.जी. द मीजी ,1972)

6.2 पश्चिमी प्रभाव और पुनर्व्याख्या

मेजी काल में पश्चिमी दर्शन, विज्ञान और ईसाई नैतिकता के प्रवेश ने जापानी बौद्ध धर्म को आत्ममंथन के लिए मजबूर किया। बौद्ध विद्वानों ने इसे केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक आधुनिक बौद्धिक धारा के रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया। इनौए एंज़ो और नाकामुरा हाजिमे जैसे विद्वानों ने बौद्ध धर्म को तर्क, नैतिकता और आधुनिक विज्ञान के अनुरूप समझाने का प्रयास किया। इसे राष्ट्रवाद से भी जोड़ा गया, ताकि जापान की सांस्कृतिक पहचान पश्चिमी प्रभावों के बीच सुरक्षित रहे। इस दौर में बौद्ध धर्म का पुनर्व्याख्यान हुआ – वह केवल धार्मिक साधना न रहकर राष्ट्रीय आत्मगौरव का साधन भी बना।

6.3 युद्धोत्तर पुनरुत्थान

द्वितीय विश्वयुद्ध की हार के बाद जापान के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भारी परिवर्तन आया। अमेरिकी कब्ज़े के समय धार्मिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की गई, जिससे बौद्ध धर्म को फिर से संगठित होने का अवसर मिला। इसी दौर में सोका गक्काई जैसे नये बौद्ध संगठन उभरे, जो समाज सुधार, शिक्षा और शांति आंदोलन में सक्रिय रहे। बौद्ध धर्म ने युद्धोत्तर जापान में "नैतिक मार्गदर्शन" और "शांति का दर्शन" प्रदान किया। परमाणु हमलों के अनुभवों ने बौद्ध शिक्षाओं – करुणा, अहिंसा और वैश्विक एकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया। (श्मिट, सी.,2016) (यंग, लुईस,2024)

7 समकालीन चुनौतियाँ

7.1 धर्मनिरपेक्षता और उपभोक्तावाद

आधुनिक जापानी समाज में धर्म अब जीवन का केंद्रीय तत्व नहीं है। औद्योगिकीकरण, तकनीकी प्रगति और उपभोक्तावादी संस्कृति ने पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को पीछे छोड़ दिया। आज अधिकांश जापानी लोग बौद्ध धर्म को जीवन की दैनिक ज़रूरत से अधिक एक सांस्कृतिक पहचान मानते हैं। विवाह और अंतिम संस्कार जैसे अवसरों पर इसकी उपस्थिति बनी रहती है, परंतु युवाओं में बौद्ध साधना के प्रति आकर्षण घटा है। इस बदलते परिवेश में बौद्ध धर्म के लिए प्रासंगिक बने रहना एक गंभीर चुनौती है।

7.2 संस्थागत आलोचनाएँ

कई विद्वानों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बड़े बौद्ध मठों पर धन और शक्ति के केंद्रीकरण की आलोचना की है। मंदिरों की आय का एक बड़ा हिस्सा अनुष्ठानों और पर्यटन से आता है, जिससे उनकी आध्यात्मिक भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगते हैं। युवा पीढ़ी इसे "व्यावसायीकृत धर्म" मानकर दूरी बनाए हुए है। इस आलोचना ने बौद्ध धर्म को आत्मसुधार की दिशा में सोचने पर मजबूर किया है।

7.3 वैश्विक प्रसार और आकर्षण

चुनौतियों के बावजूद जापानी बौद्ध परंपराएँ वैश्विक स्तर पर अत्यंत प्रभावशाली रही हैं। ज़ेन ध्यान, जापानी उद्यान , चाय-समारोह और "वाबी-साबी" सौंदर्य-दर्शन ने पश्चिमी देशों को गहराई से प्रभावित किया है। वर्तमान "माइंडफुलनेस मूवमेंट" जापानी ज़ेन और बौद्ध साधना से प्रेरित है। इस प्रकार, जबकि जापान में इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न उठते हैं, विश्वभर में यह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। (कुक, जोआना, और हिल्डेगार्ड डिमबर्गर,2021)

8 निष्कर्ष

जापान में बौद्ध धर्म केवल धार्मिक आस्था नहीं रहा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का स्तंभ बना। स्थापत्य, कला, साहित्य, शिक्षा और दर्शन में इसकी स्थायी देन है। होर्यू-जी और तोदाइ-जी जैसे मंदिर, ज़ेन उद्यान और साहित्यिक परंपरा इस योगदान के जीवित उदाहरण हैं। बौद्ध धर्म ने जापान को न केवल आध्यात्मिक पहचान दी, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर में भी उसकी जगह सुनिश्चित की।

भारत, जहाँ बौद्ध धर्म का जन्म हुआ, वहाँ यह धीरे-धीरे क्षीण हो गया। परंतु जापान ने इसे आत्मसात कर नया जीवन दिया। जापानी बौद्ध धर्म भारतीय परंपरा का जीवित रूप है, जिसने समय के साथ लचीलापन दिखाया और समाज की बदलती ज़रूरतों के अनुसार स्वयं को ढाला। यह तुलनात्मक दृष्टि बताती है कि धर्म केवल अपनी जन्मभूमि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान से नये रूप ग्रहण करता है। भविष्य में जापानी बौद्ध धर्म की भूमिका केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैश्विक होगी। जलवायु परिवर्तन, मानसिक तनाव और युद्ध जैसी चुनौतियों के बीच इसकी करुणा, सह-अस्तित्व और अहिंसा की शिक्षाएँ और भी प्रासंगिक हो सकती हैं। यह जापानी समाज में नैतिकता और पर्यावरणीय चेतना का आधार बनेगा, जबकि विश्व स्तर पर यह शांति और मानवतावाद का दूत साबित हो सकता है।

संदर्भ सूची:

[1] कुक, जोआना, और हिल्डेगार्ड डिमबर्गर। (2021) 2023. "बौद्ध धर्म"। द ओपन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एंथ्रोपोलॉजी में, फेलिक्स स्टीन द्वारा संपादित। द कैम्ब्रिज इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एंथ्रोपोलॉजी के प्रथम संस्करण की प्रतिलिपि । ऑनलाइन: http://doi.org/10.29164/21buddhism

[2] एशियाई कला विभाग. (2000). असुका और नारा काल (538–794). हाइलब्रुन कला इतिहास समयरेखा में. न्यूयॉर्क: द मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट. http://www.metmuseum.org/toah/hd/asna/hd_asna.htm

[3] श्मिट, सी. जर्मनी और जापान में नागरिक धर्म और स्मरण संस्कृति की तुलना। एशियन जर्नल ऑफ़ जर्मेनियम, यूरोपियन जर्नल, 1 , 10 (2016)। https://doi.org/10.1186/s40856-016-0010-1

[4] यंग, लुईस, '1930 के दशक के जापान में लोकतंत्र का विघटन' , आर्कन फंग, डेविड मॉस और ऑड आर्ने वेस्टड (संपादक) में , जब लोकतंत्र टूटता है: प्राचीन एथेंस से लेकर वर्तमान दिन तक लोकतांत्रिक क्षरण और पतन में अध्ययन (न्यूयॉर्क, 2024; ऑनलाइन संस्करण, ऑक्सफ़ोर्ड अकादमिक , 21 मार्च 2024), https://doi.org/10.1093/oso/9780197760789.003.0004

[5] बेस्ली, डब्ल्यू.जी. द मीजी रेस्टोरेशन. स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972. आईएसबीएन 0804708150 आईएसबीएन 9780804708159

[6] लार्सन, बी. (2018, 21 अप्रैल)। जापान में शिंटो और बौद्ध धर्म का संक्षिप्त इतिहास । 7 जुलाई, 2021 को कल्चर ट्रिप से प्राप्त: https://theculturetrip.com/asia/japan/articles/a-brief-history-of-shinto-and-buddhism-in-japan/

[7] शुद्ध भूमि बौद्ध धर्म https://en.wikipedia.org/wiki/Pure_Land_Buddhism

[8] बेनेश, ओ. (2016). ज़ेन, समुराई और युद्धकला का पुनर्विचार. एशिया-प्रशांत जर्नल, 14(17): https://e1.doi:10.1017/S1557466016012857

[9] डी बेरी, विलियम थियोडोर एवं अन्य (संपा.). (2001). जापानी परम्परा के स्रोत. खंड 1 (द्वितीय संस्करण). न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस. (इस ग्रन्थ में सत्रह अनुच्छेदों का संविधान तथा शोतोकु ताइशी के जीवन से सम्बन्धित अन्य महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सम्मिलित हैं।)

[10] जापान के नए धर्म: पश्चिमी भाषा की सामग्रियों की एक ग्रंथ सूची , इरहार्ट, एच. बायरन.

[11] https://quod.lib.umich.edu/c/cjs/aba2512.0001.001/--new-religions-of-japan-a-bibliography-of-western-language?rgn=main;view=fulltext

[12] कार्टर, रॉबर्ट ई. (2021). जापानी धार्मिक दर्शन. वाइली-ब्लैकवेल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द फिलॉसफी ऑफ़ रिलिजन. https://doi.org/10.1002/9781119009924.eopr0189

[13] https://www.britannica.com/topic/Buddhism/Historical-development

[14] अकीरा मसाकी(2022). निर्जीव प्राणियों के ज्ञानोदय से विचारित जापानी बौद्ध धर्म की आध्यात्मिकता. अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 115, लेख संख्या 102019. ISSN 0883-0355. https://doi.org/10.1016/j.ijer.2022.102019.

[15] (https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0883035522000970)

[16] जापान में बौद्ध धर्म. विकिपीडिया

[17] https://en.wikipedia.org/wiki/Buddhism_in_Japan

[18] अकीरा मसाकी(2022). निर्जीव प्राणियों के ज्ञानोदय से विचारित जापानी बौद्ध धर्म की आध्यात्मिकता. अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, खंड 115, लेख संख्या 102019. ISSN 0883-0355. https://doi.org/10.1016/j.ijer.2022.102019 .

[19] (https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0883035522000970)

[20] एशियाई कला विभाग. (2000). असुका और नारा काल (538–794). हाइलब्रुन कला इतिहास समयरेखा में. न्यूयॉर्क: द मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट. http://www.metmuseum.org/toah/hd/asna/hd_asna.htm

[21] कार्टर, रॉबर्ट ई. (2021). जापानी धार्मिक दर्शन. वाइली-ब्लैकवेल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द फिलॉसफी ऑफ़ रिलिजन. https://doi.org/10.1002/9781119009924.eopr0189

[22] डी बेरी, विलियम थियोडोर एवं अन्य (संपा.). (2001). जापानी परम्परा के स्रोत. खंड 1 (द्वितीय संस्करण). न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस. (इस ग्रन्थ में सत्रह अनुच्छेदों का संविधान तथा शोतोकु ताइशी के जीवन से सम्बन्धित अन्य महत्त्वपूर्ण दस्तावेज सम्मिलित हैं।)

[23] https://www.britannica.com/topic/Buddhism/Historical-development

[24] बेस्ली, डब्ल्यू.जी. द मीजी रेस्टोरेशन. स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972. आईएसबीएन 0804708150 आईएसबीएन 9780804708159

[25] बेनेश, ओ. (2016). ज़ेन, समुराई और युद्धकला का पुनर्विचार. एशिया-प्रशांत जर्नल, 14(17): https://e1.doi:10.1017/S1557466016012857

[26] भूमि कुक, जोआना, और हिल्डेगार्ड डिमबर्गर। (2021) 2023. "बौद्ध धर्म"। द ओपन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एंथ्रोपोलॉजी में, फेलिक्स स्टीन द्वारा संपादित। द कैम्ब्रिज इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एंथ्रोपोलॉजी के प्रथम संस्करण की प्रतिलिपि । ऑनलाइन: http://doi.org/10.29164/21buddhism

[27] लार्सन, बी. (2018, 21 अप्रैल)। जापान में शिंटो और बौद्ध धर्म का संक्षिप्त इतिहास । 7 जुलाई, 2021 को कल्चर ट्रिप से प्राप्त: https://theculturetrip.com/asia/japan/articles/a-brief-history-of-shinto-and-buddhism-in-japan/

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

[28] शिमट, सी. जर्मनी और जापान में नागरिक धर्म और स्मरण संस्कृति की तुलना। एशियन जर्नल ऑफ़ जर्मेनियम, यूरोपियन जर्नल, 1 , 10 (2016)। https://doi.org/10.1186/s40856-016-0010-1

[29] शुद्ध भूमि बौद्ध धर्म https://en.wikipedia.org/wiki/Pure_Land_Buddhism

[30] यंग, लुईस, '1930 के दशक के जापान में लोकतंत्र का विघटन' , आर्कन फंग, डेविड मॉस और ऑड आर्ने वेस्टड (संपादक) में , जब लोकतंत्र टूटता है: प्राचीन एथेंस से लेकर वर्तमान दिन तक लोकतांत्रिक क्षरण और पतन में अध्ययन (न्यूयॉर्क, 2024; ऑनलाइन संस्करण, ऑक्सफोर्ड अकादमिक, 21मार्च 2024), https://doi.org/10.1093/oso/9780197760789.003.0004

[31] जापान के नए धर्म: पश्चिमी भाषा की सामग्रियों की एक ग्रंथ सूची , इरहार्ट, एच. बायरन.

[32] https://quod.lib.umich.edu/c/cjs/aba2512.0001.001/--new-religions-of-japan-a-bibliography-of-western-language?rgn=main;view=fulltext

[33] जापान में बौद्ध धर्म. विकिपीडिया

[34] https://en.wikipedia.org/wiki/Buddhism_in_Japan